शिक्षा व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर विवेकानंद का चिंतन

डा. धीरज

डा. जितेंद्र कुमार भारद्वाज, (राजनीति विज्ञान विभाग)

सार

शिक्षा राष्ट्र के विकास और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में, विशेष रूप से आज के वैश्वीकृत प्रतिस्पर्धा माहौल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है। 19वीं शताब्दी में शिक्षा प्रणाली को एक आदर्श ढांचे में रखने के लिए कई महान शिक्षाविद अपने व्यक्तिगत विचारों और शिक्षा के दर्शन के साथ सामने आए। इन सबके बीच, स्वामी विवेकानंद (12 जनवरी, 1863 4 जुलाई, 1902) अपने विचारों और शिक्षा के दर्शन के साथ भारत के सबसे प्रभावशाली और प्रसिद्ध व्यक्तित्व, शिक्षाविद और सुधारक थे। उनके शिक्षा संबंधी विचार आज भी हमारी शिक्षा और जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित और प्रेरित करते हैं।

स्वामी जी वेदांत के दर्शन में विश्वास करते थे, जो मानता है कि मानव जीवन का लक्ष्य "सृष्टिकर्ता के साथ एकता" प्राप्त करना है। विवेकानंद न केवल वेदांत के प्रबल समर्थक थे बल्कि उन्होंने वेदांत को एक व्यावहारिक रूप भी दिया था।उन्होंने वास्तव में एक व्यक्ति-निर्माण करने वाली शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया। वह कहते हैं कि ऐसी शिक्षा मनुष्य में पहले से ही विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है।[1]

स्वामी विवेकानंद हमेशा मानते थे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से ही राष्ट्र का विकास संभव है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुखी जीवन के लिए एक सुरक्षित पथ देती है, क्योंकि यह एक अच्छा रोजगार, प्रतिष्ठित संस्थानों में उच्च शिक्षा के अवसर और प्रगतिशील जीवन का आश्वाशन देती है।

युवाओं में मजबूत चरित्र निर्माण का मुद्दा स्वामी विवेकानंद के सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। उनके अनुसार राष्ट्र निर्माण की दशा में प्रत्येक मनुष्य में अच्छे व्यक्तित्व का विकास आवश्यक है। वे कहते हैं, "मनुष्य के निर्माण का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास लेकिन आधुनिक भारत ने जीवन के वैज्ञानिक और यांत्रिक तरीकों पर अत्यधिक जोर दिया है जो मनुष्य को एक मशीन की स्थिति में तेजी से बदल रहा है। नैतिक

[1] स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण और भारतीय शिक्षा प्रणाली, डा. रूबी (2394-7500), 2022

और धार्मिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सभ्यता के मूलभूत सिद्धांतों की अवहेलना की जा रही है। जबकि स्वामी जी के अनुसार "शिक्षा का उद्देश्य एक मनुष्य को मानव से मनुष्य और सामाजिक पशु से दिव्य अवस्था में आत्म-प्रयास, आत्म-साक्षात्कार और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से बढ़ने में मदद करना होना चाहिए।"[2]

विशेष शब्द

सामंजस्यपूर्ण, नैतिक, प्रतिष्ठा, पुनरूत्थान, सार्वभौमिक, व्यवहारिकता

उद्देश्य -

1. स्वामी विवेकानंद की शिक्षा को जानना।
2. नई शिक्षा नीति पर स्वामी विवेकानंद के विचारों के प्रभाव को देखना।
3. वर्तमान समाज पर स्वामी विवेकानंद की शिक्षा के महत्व को जानना।

परिचय

“शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो आपके मस्तिष्क में डाल दी जाती है। हमारे पास जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और विचारों का समावेश होना चाहिए। हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।”[3] अतीत में निहित और भारत की प्रतिष्ठा में गर्व से भरे, विवेकानंद के विचार समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण में आधुनिक हैं और भारत के अतीत और उसके वर्तमान के बीच एक तरह के पुल हैं। उनका मिशन समाज सेवा, जन शिक्षा, धार्मिक पुनरुत्थान और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागृति और मानव जाति की सेवा करना था। हम सभी इस तथ्य से सहमत होंगे कि एक 'उज्ज्वल कैरियर बनाने के लिए एक 'अच्छे' शिक्षण संस्थान में 'उचित' शिक्षा बहुत आवश्यक है।

छात्रों को दी जाने वाली सामान्य सलाह यह है कि उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम के 'भागों का गहन अध्ययन करना चाहिए और 'अच्छे' अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण करनी चाहिए। हालाँकि, एक जागरूकता है कि एक उचित शिक्षा में केवल कुछ विषयों के अध्ययन से अधिक शामिल होना चाहिए।

स्वामी जी के जन्म को डेढ़ शताब्दी से अधिक समय बीत चुका है। लेकिन आज भी उनके विचार विशेषकर शिक्षा संबंधी विचार उतने ही प्रासंगिक हैं। उन्होंने अपने रचनात्मक विचारों और

[2] राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद का चिंतन, डा. धीरज, 2023
[3] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद 5.232

दृष्टि में शिक्षा को बहुत महत्व दिया। जब स्वामी जी ने भारत भ्रमण के दौरान गरीबों और दलितों की स्थिति देखी और उसके बारे में पूछताछ की तो इस पड़ताल में उन्होंने पाया कि भारत और यूरोप की शिक्षा प्रणाली में भारी अंतर है। इस अंतर को पाटने के लिए उन्होंने पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाले आध्यात्मिक पुल के वास्तुकार के रूप में वेदांतिक दर्शन के केंद्रीय सत्यों पर निर्मित एक तात्कालिक पुल का निर्माण किया।

स्वामी जी ने देखा कि किसी भी देश के पिछड़ेपन का मुख्य कारण जनता की उपेक्षा और शोषण है। उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए उन्हें कृषि, ग्रामोद्योग और स्वच्छ जीवन शैली के बेहतर तरीके सिखाना आवश्यक था। इसलिए उन्होंने मानव निर्माण की शिक्षा को महत्व दिया। समग्र शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारत और विश्व का उत्थान किया जा सकता है। उनके अनुसार, एकमात्र सेवा जो हमारे निम्न वर्गों के लिए की जा सकती है, वह है उन्हें शिक्षित करना और उनके खोए हुए व्यक्तित्व का विकास करना। वर्तमान समय में हमें स्वामीजी के शिक्षा संबंधी विचारों पर गहराई से चिंतन करने की आवश्यकता है ताकि हम भारत को विश्व का अग्रणी देश बनाने के लिए अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त कर सकें।

शिक्षा बच्चों के दिमाग में जबरदस्ती डाली गई जानकारी नहीं है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार यदि शिक्षा का अर्थ केवल सूचना है तो पुस्तकालय विश्व के महानतम संत हो सकते हैं और विश्वकोष ऋषि बन गए होते। शिक्षा मनुष्य में पहले से ही प्राप्त पूर्णता की अभिव्यक्ति है। अतः उनके अनुसार परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री प्राप्त कर लेना शिक्षा नहीं है। शिक्षा वह है जो मुक्ति प्रदान करती है (सा विद्या या विमुक्तये)। यह व्यक्ति को नकारात्मक प्रवृत्तियों और अपने वास्तविक 'स्व' के बारे में अज्ञानता से मुक्त करता है।

भारतीय परंपरा में, 'विद्या' (सीखना या ज्ञान) को 'अविद्या' (अज्ञानता या गैर-ज्ञान) के विपरीत माना जाता है, और इसे पूर्ण होने के लिए 'आत्म-विद्या' (स्वयं का ज्ञान) में परिणत होना चाहिए। यजुर्वेद में समग्र जीवन जीने और अमरता प्राप्त करने के लिए सांसारिक और आध्यात्मिक ज्ञाने दोनों की खोज पर जोर दिया गया है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को स्वावलंबी बनाकर उसके चरित्र और बुद्धि का विकास कर अस्तित्व के संघर्ष के लिए तैयार करती है। सीखना हमेशा एक व्यक्ति को जीवन की परम एकता का एहसास कराने के लिए आत्म चेतना में विकसित होने में मदद करता है, इसलिए यह एक आजीवन प्रक्रिया है।

एक दार्शनिक के रूप में उन्होंने साबित किया कि वेदांत का प्राचीन दर्शन आज की चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकता है और आधुनिक समस्याओं को बहुत प्रभावी ढंग से हल कर सकता है। उन्होंने पश्चिम के आदर्शवादी दर्शन और हिंदू धर्म के रचनात्मक वेदांतिक दर्शन को संश्लेषित किया। सार्वभौमिक भाईचारे का प्रचार किया और अपने आदर्शवादी तरीके से

मानवतावाद की व्याख्या की। उनके अनुसार मानव जीवन शक्तिशाली और निर्बल के बीच सतत संघर्ष है। इसलिए, शिक्षा को इस संघर्ष के लिए पुरुषों को तैयार करना चाहिए और सभी चुनौतियों का साहस और आत्मविश्वास से सामना करना चाहिए। इससे निडर लोगों को तैयार करना चाहिए। शिक्षा किसी व्यक्ति के जीवन के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए अनुकूल होनी चाहिए, और यह कि प्रकृति का विकास स्वयं को मानव मन के विकास में प्रकट करता है। स्वामीजी कहते हैं, "हम अपनी प्रकृति के मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक और कामकाजी पक्षों के समान रूप से विकसित होने के साथ सामंजस्यपूर्ण प्राणी बनना चाहते हैं। राष्ट्र के लोग इन प्रकारों में से एक को जीवन में उतारते हैं वे इससे अधिक नहीं समझ सकते, विचार वास्तव में यह है कि हमें कई तरफा होना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की आवश्यक विशेषताएं आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता हैं। एक प्रकृतिवादी दृष्टिकोण के रूप में उन्होंने इस बात पर जोर दिया। कि वास्तविक शिक्षा प्रकृति और प्राकृतिक प्रवृत्तियों के माध्यम से ही संभव है, आदर्शवादी दृष्टिकोण के रूप में, उनका कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को नैतिक और आध्यात्मिक गुणों के साथ विकसित करना है। व्यावहारिकतावादियों के दृष्टिकोण में, उन्होंने भौतिक समृद्धि प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, उद्योग और विज्ञान की पश्चिमी शिक्षा पर जोर दिया।

स्वामी विवेकानंद वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के खतरों से वाकिफ थे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मनुष्य-निर्माण, जीवन-निर्माण, चरित्र-निर्माण और विचारों को आत्मसात करने वाली नहीं है। वे चाहते थे कि शिक्षा से स्वावलंबी और निडर व्यक्ति तैयार हो। उन्होंने शिक्षा को बहुत महत्व दिया। उनके अनुसार 'हमारे निम्न वर्गों के लिए की जाने वाली एकमात्र सेवा उन्हें शिक्षा देना है, उनके खोए हुए व्यक्तित्व को विकसित करना है... वर्तमान शिक्षा पूरी तरह से एक नकारात्मक शिक्षा है। नकारात्मक शिक्षा पर आधारित कोई भी प्रशिक्षण मृत्यु से भी बदतर है। बच्चे को स्कूल ले जाया जाता है, और वह सीखता है कि उसका पिता मूर्ख है, दूसरा कि उसका दादा पागल है, तीसरा कि उसके सभी शिक्षक पाखंडी हैं, चौथा यह कि सभी पवित्र पुस्तकें झूठ हैं।

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानसिक गुणों के विकास पर अनिवार्य रूप से बल दिया जाता था। सीखना हमेशा भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है। इसे अनुशासन की एक प्रक्रिया के रूप में माना जाता था जिसके माध्यम से व्यक्ति ईश्वर और समाज की सेवा करता था। ज्ञान मनुष्य के लिए सबसे पवित्र और आवश्यक वस्तु है। छात्रों को इसे ठीक से प्राप्त करने और लागू करने का निर्देश दिया जाना चाहिए। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे सीखने के इच्छुक हों, नियमित रूप से अध्ययन करें, बुद्धिमत्ता रखें, जो सीखते हैं उसे लागू करें, एकाग्रता रखें, तेज याददाश्त रखें और अच्छा निर्णय लें। इन सभी गुणों के

साथ एक अनुशासित जीवन व्यतीत करें, माता-पिता, शिक्षकों और अन्य बड़ों का उचित सम्मान करें और जीवन जीने की कला सीखें।

स्वामी विवेकानंद समझ चुके थे कि मानव जाति संकट के दौर से गुजर रही है। जीवन के वैज्ञानिक और यांत्रिक तरीकों पर अत्यधिक जोर मनुष्य को मशीन की स्थिति में तेजी से कम कर रहा है। नैतिक और धार्मिक मूल्यों का हनन हो रहा है। सभ्यता के मूलभूत सिद्धांतों की उपेक्षा की जा रही है। आज मनुष्य जो समाज का प्रमुख घटक है, शायद ही स्वभाव से मनुष्य हो। इसलिए, स्वामी विवेकानंद ने मनुष्य के निर्माण की परिकल्पना की जो दयालु होने के साथ-साथ बुद्धिमान, "महान हृदय" हो, और जो गतिशीलता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सके। स्वामी विवेकानंद ने समझा कि मन के ऐसे गुण केवल एक मजबूत शरीर में ही संभव थे, जिसमें लोहे की मांसपेशियां और फौलाद की नसें हों, जैसा कि उन्होंने कहा था। वह चाहते थे कि छात्र पहले शारीरिक रूप से मजबूत और सक्रिय हो। उन्होंने कहा:-"मेरे युवा दोस्तो आपको मेरी एक सलाह है कि तुम मजबूत बनो।" तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल के द्वारा स्वर्ग के अधिक निकट होगे। वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो शक्ति और पुरुषार्थ को बढ़ावा दे एक ऐसी शिक्षा जो प्रत्येक छात्र के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करे। यह व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र पुनरूत्थान की शिक्षा है स्वामी विवेकानंद और शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व की पूर्णता की ओर बढ़ें।

शिक्षा का पहला और सबसे बड़ा उद्देश्य एक व्यक्ति को स्वयं की पूर्णता की पहचान करना है जो पहले से ही उसमें है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व में निहित क्षमताएं उसके संपूर्ण विकास को पूरा करने में प्रकट होती हैं स्वामी विवेकानंद के अनुसार मनुष्य में सभी प्रकार का ज्ञान (भौतिक और आध्यात्मिक) निहित है लेकिन वह अज्ञानता के पर्दे से ढका हुआ है। शिक्षा का उद्देश्य अज्ञानता के पर्दे को हटाना है ताकि हमारे भीतर आत्म-ज्ञान विकसित हो सके और हम एक पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो सकें।

स्वामी विवेकानंद बालक का विकास कर उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के पक्षधर थे। शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से गीता का अध्ययन करने से बालक कर्मफल तत्त्व को जान जाता है। वह कल का निडर और शारीरिक रूप से मजबूत नागरिक बन जाता है। बालक के मानसिक एवं तार्किक विकास के लिए वेदान्त एवं आधुनिक विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। शिक्षा से बच्चों का आध्यात्मिक और नैतिक विकास संभव है, इसलिए हमें भी शिक्षा में आध्यात्मिक पुस्तकों को स्थान देना चाहिए। चरित्र निर्माण चरित्र निर्माण सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और यह शैक्षिक उद्देश्यों में सबसे ऊपर होना चाहिए। सच्चे चरित्र वाले व्यक्ति में सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि शक्ति और सज्जनता सह-अस्तित्व में

रहेंगे। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि "किसी भी व्यक्ति का चरित्र उसकी प्रवृत्तियों का योग है, उसके दिमाग के झुकाव का योग है जैसे जैसे सुख-दुःख उसकी आत्मा के सामने से गुजरते हैं, वे उस पर अलग-अलग चित्र छोड़ जाते हैं और इन संयुक्त छापों के परिणाम को ही मनुष्य का चरित्र कहा जाता है।" मजबूत चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। किसी चरित्र को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका शिक्षक या बड़ों द्वारा निर्धारित आदर्श का व्यक्तिगत उदाहरण है। शिक्षा ऐसा व्यक्ति तैयार करे जिसकी कथनी और करनी में कोई विरोध न हो। स्वामी जी के अनुसार यदि शक्ति दूसरों के दमन, प्रतिबंध और अधीनता की ओर ले जाती है, तो यह केवल चरित्र के अनुचित और अपर्याप्त विकास की ओर इशारा करती है।

स्वामीजी के तकनीकी शिक्षा के दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। अगर हमारे पास श्रम, धन और मानव समाज की अवधारणा है। हमें 'धन सृजन' के बारे में समझने की जरूरत है। समाज और राष्ट्र की स्थिरता के लिए धन सृजन सबसे महत्वपूर्ण है श्रम से धन उत्पन्न हो सकता है। भारत को अभी पूरी तरह से निवेशक अनुकूल बनना है और निजी उद्यमों को आकर्षित करना है। भारतीय इंजीनियर के लिए आवश्यक प्रशिक्षण की आवश्यकता है, ताकि वह इस देश को उस तरह से आकार दे सके जैसा स्वामी जी ने देखा था। स्वामीजी ने बार-बार कहा है कि पेशेवर दृष्टिकोण, संयुक्त प्रयास और उद्यमशीलता की भावना भारतीय इंजीनियर हैं।

स्वामीजी ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा, "आज हमें अपने देश में पश्चिमी विज्ञान के साथ वेदांत, ब्रह्मचर्य के साथ मार्गदर्शक आदर्श वाक्य और श्रद्धा या स्वयं में विश्वास की आवश्यकता है।"

एक शिक्षक को उसे(विद्यार्थी) लगातार यह या वह करने के लिए नहीं कहना चाहिए। ऐसी नकारात्मक दिशाएं उसकी बुद्धि और मानसिक विकास को कुंद कर देती हैं। इसलिए प्रत्येक बच्चे को उसकी आंतरिक प्रकृति के अनुसार विकसित होने के अवसर दिए जाने चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में स्वधर्म के विचार को स्वीकार किया। सभी को अपने जैसा ही बनना चाहिए और दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए। इसलिए उन्होंने विदेशी शिक्षा थोपने की निंदा की। उन्होंने कहा "किसी विदेशी भाषा में दूसरों के विचारों को कंठस्थ करना और उसमें अपना मस्तिष्क भरना और कुछ विश्वविद्यालय की डिग्री लेना, आप खुद को शिक्षित होने पर गर्व कर सकते हैं। सच्चा सुधार आत्म-प्रेरित है। बच्चों पर किसी भी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए। बाहरी दबाव केवल विनाशकारी प्रतिक्रियाएँ पैदा करता है जिससे हठ और अनुशासनहीनता पैदा होती है। स्वतंत्रता, प्रेम और सहानुभूति के वातावरण में ही बच्चे में साहस और आत्मनिर्भरता का विकास होगा।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विवेकानंद

29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य प्राचीन और सनातन ज्ञान, भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को संबल प्रदान करते हुए देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। इसका उद्देश्य ऐसे इंसानों का विकास करना है जो तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनके करुणा और सहानुभति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक, कल्पना शक्ति एवं नैतिक मूल्य का समावेश हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और विकास, शिक्षा के ढांचे को लचीला, सीखने पर जोर, रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना, तार्किक एवं रचनात्मक सोच के विकास पर आग्रह है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा पर जोर देती है। इसमें वर्णित है कि जहाँ तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा के माध्यम से भाषा, कला और संस्कृति के संवर्धन पर भी जोर देती है। वर्णित है कि व्यक्तियों की प्रसन्नता, कल्याण, संज्ञानात्मक विकास एवं सांस्कृतिक पहचान वह महत्वपूर्ण कारण है जिसके लिए सभी प्रकार की भारतीय कलाएँ, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल को शिक्षा से आरम्भ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों को प्रदान की जानी चाहिए।

शारीरिक शिक्षा को भी पाठयत्तर से पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यवसायिक शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए कहा गया है कि समस्त शिक्षण संस्थान चरणबद्ध तरीके से व्यवसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करें और इसकी शुरुआत आरंभिक वर्षों में व्यवसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान करने से हो, जो सुचारु रूप से प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं से होते हुए उच्चतर शिक्षा तक जाय। स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिसत विद्यार्थियों को वर्ष 2025 तक व्यवसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जायेगा जिसके लिए लक्ष्य और समयसीमा के साथ एक स्पष्ट कार्ययोजना विकसित की जायेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्र और युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण का अनुसरण करती है क्योंकि इसमें परंपरा और आधुनिक ज्ञान का मिश्रण है। इसी क्रम में भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के दर्शन के अनुरूप एक बच्चे के पूर्ण व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करने के लिए पहली से पांचवीं कक्षा के छात्रों के लिए रामकृष्ण मिशन का 'जागृति' कार्यक्रम शुरू किया। इस मिशन के अनुसार, 'जागृति' कार्यक्रम बच्चों की क्षमता की पहचान करेगा। यह मिशन एनईपी से जुड़ा हुआ है जो इसे ठीक से और सुचारू रूप से लागू

करने के लिए नींव का काम करेगा। नई शिक्षा नीति 2020 स्वामी विवेकानंद के दर्शन से गहराई से प्रेरित है।

हमें 21वीं सदी के ऐसे नागरिक तैयार करने चाहिए जो वैश्विक उत्तरदायित्व उठा सकें। इसलिए हमारी शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। एनईपी 2020 छात्रों के लिए शिक्षक-आधारित समग्र शिक्षा प्रणाली पर ध्यान देने के साथ उस दिशा में एक कदम है।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने के लिए शिक्षा के मौलिक होने की बात करती है। इस शिक्षा नीति में (लर्निंग फ्रॉम डूइंग) करके सीखने पर बहुत जोर दिया गया है जैसे की स्वामी विवेकानंद सोचते थे अपने आप को सिखाओ, हर किसी को उसका वास्तविक स्वरूप सिखाओं, सोई हुई आत्मा को बुलाओ और देखो कि वह कैसे जागती है। शक्ति आएगी, महिमा आएगी, अच्छाई आएगी, पवित्रता आएगी, और जो कुछ भी उत्कृष्ट होगा वह तब आएगा जब इस सोई हुई आत्मा को आत्म चेतन गतिविधि के लिए जगाया जाएगा'।[4]

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कहना है कि आर्थिक विकास के मामले में भारत को वैश्विक मंच पर अग्रणी बनाने में शिक्षा महत्वपूर्ण है। अनंत, सार्वभौमिक और सच्ची मानवीय श्रेष्ठता के अपने दृष्टिकोण के साथ एक नए और गतिशील भारत का विकास, जो उसके अपने शरीर-राजनीतिक के भीतर क्रांतिकारी परिवर्तनों को प्रभावित करेगा और शेष विश्व पर एक विशिष्ट प्रभाव भी डालेगा, वह दृष्टि है जिसे होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद कहते हैं: हमें दुनिया को सिखाने के लिए अभी कुछ करना है। यही कारण है कि सैकड़ों वर्षों के उत्पीडन, लगभग एक हजार वर्षो के विदेशी शासन और विदेशी दमन के बावजूद यह देश जीवित है। यह राष्ट्र अभी भी जीवित है, यह अभी भी ईश्वर को, धर्म और आध्यात्मिकता के खजाने को पकड़े हुए है।[5]

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कहना है कि शिक्षा को चरित्र का निर्माण करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद इस संबंध में कहते हैं: 'हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।[6]

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय परंपरा और मूल्य प्रणालियों पर दृढ़ता से शिक्षा के निर्माण और भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत के पोषण पर जोर देती है। स्वामी विवेकानंद का भी यही मत है जब वे कहते हैं: 'हमें अपनी प्रकृति के अनुसार बढ़ना चाहिए। मैं अन्य जातियों की संस्थाओं की निंदा नहीं करता, वे उनके लिए अच्छे हैं, लेकिन हमारे लिए नहीं। हम,

[4] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 3.193

[5] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 3.148

[6] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद 5.232

अपनी परंपराओं के साथ, हमारे पीछे हजारों वर्षों के कर्मों के साथ, स्वाभाविक रूप से अपने झुकाव का अनुसरण कर सकते हैं, अपने स्वयं के खांचे में भाग सकते हैं, और हमें यह करना होगा।[7]

5. हालाँकि, स्वामीजी यह भी बताते हैं कि भारत और अन्य देशों के बीच विचारों का आपसी आदान-प्रदान आज की आवश्यकता है। वह कहता है: 'देना और लेना कानून है; और अगर भारत एक बार फिर खुद को ऊपर उठाना चाहता है, तो यह नितांत आवश्यक है कि वह अपने खजाने को बाहर लाए और उन्हें पृथ्वी के राष्ट्रों के बीच प्रसारित करें, और बदले में वह प्राप्त करने के लिए तैयार रहे जो दूसरों को उसे देना है। और आदान-प्रदान के माध्यम से इस बातचीत में, भारत अपने युग धर्म की खोज करेगा, जो कि वर्तमान युग के लिए उपयुक्त मार्ग है।[8]

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है कि शिक्षक समाज के सबसे सम्मानित और आवश्यक सदस्य हैं। हालांकि, भारतीय लोकाचार में प्रचलित इस उदात्त आदर्श को बनाए रखने के लिए, शिक्षकों को न केवल अपने विषयों का ज्ञानी व्यक्ति बल्कि उच्च चरित्र का व्यक्ति भी होना चाहिए। यह एक महान आदर्श पर जीने वाला जीवन है जो दूसरे जीवन को वास्तव में आदर्श को स्वीकार करने और जीने के लिए प्रेरित करता है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं: 'किसी को बचपन से ही उसके साथ रहना चाहिए जिसका चरित्र एक धधकती आग की तरह है और उसके सामने उच्चतम शिक्षा का एक जीवंत उदाहरण होना चाहिए|[9]

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कहना है कि ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले, वंचित और कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। स्वामी जी ने हमेशा राष्ट्र की इस तत्काल आवश्यकता पर बल दिया है। वह उपदेश देते हैं: 'जनता को शिक्षित करो और ऊपर उठाओ, तभी एक राष्ट्र संभव है।... सारा दोष यहीं है कि झोपडियों में रहने वाले वास्तविक जन राष्ट्र अपनी मर्दानगी, अपनी वैयक्तिकता को भूल गए हैं|[10]

8. राष्ट्रीय शिक्षा नीत 2020 बोलचाल की भाषाओं के माध्यम से शिक्षा पर जोर देती है। स्वामी विवेकानंद इसे स्वीकार करते हैं, जिस भाषा में हम स्वाभाविक रूप से अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं, जिसमें हम अपने क्रोध, शोक, या प्रेम आदि का संचार करते हैं उससे बेहतर कोई भाषा नहीं हो सकती। हमें उस विचार, अभिव्यक्ति के उस तरीके, उस उच्चारण और सभी पर टिके रहना चाहिए।[11]

---

[7] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 3.213-20
[8] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 4.365
[9] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 5.369
[10] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 8.307
[11] कंप्लीट वर्क्स ऑफ विवेकानंद, 6.187

निष्कर्ष

शिक्षा राष्ट्र के विकास और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वामी जी वेदांत के दर्शन में विश्वास करते थे, जो मानता है कि मानव जीवन का लक्ष्य "सृष्टिकर्ता के साथ एकता" प्राप्त करना है। विवेकानंद न केवल वेदांत के प्रबल समर्थक थे बल्कि उन्होंने वेदांत को एक व्यावहारिक रूप भी दिया था। उनका मिशन समाज सेवा, जन शिक्षा, धार्मिक पुनरुत्थान और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जागृति तथा मानव जाति की सेवा करना था। नई शिक्षा नीति 2020 राष्ट्र और युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण का अनुसरण करती है क्योंकि इसमें परंपरा और आधुनिक ज्ञान का मिश्रण है।

संदर्भ

अन्य पुस्तकें

1. स्वामी विवेकानंद ऑन हिमसेल्फ, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2006

2. स्वामी विवेकानंद टीचिंग ऑफ रामकृष्ण मठ हावड़ा आश्रम वेदांता प्रेस,1946

3. द कंप्लीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानंद अद्वैत आश्रम कोलकाता, 2008

4. Bhupendranath Datta, Swami Vivekanananda. Patriot- Prophet, Nababharat Publishers, Kolkata; c1993.

5. Swami Tejasananda. A Short Life of Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, Kolkata; c2012.